International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' में स्त्री-अस्मिता का स्वर

डॉ.प्रीति कुमारी

सहायक प्राध्यापक,हिंदी विभाग, महंथ महादेवानंद महिला महाविद्यालय,वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय,आरा

शोध-सार:
यह शोध-पत्र अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' में अभिव्यक्त स्त्री-अस्मिता के स्वर का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध का मूल तर्क यह है कि कविता स्त्री-अस्मिता को केवल स्त्रीत्व की जैविक पहचान के रूप में नहीं, बल्कि गरिमा, स्वायत्तता, वाणी, बौद्धिक मान्यता और समान मनुष्यता की माँग के रूप में प्रस्तुत करती है। अध्ययन में विशेष रूप से कविता की क्रमिक क्रियाओं- "पढ़ा गया", "देखा गया", "सुना गया" और "भोगा गया"- का विश्लेषण किया गया है, जिनके माध्यम से स्त्री के प्रति पितृसत्तात्मक व्यवहार की संरचना उद्घाटित होती है। सिमोन द बोव्आर की सामाजिक-सांस्कृतिक निर्मिति की अवधारणा तथा हेलेन सिक्सू की स्त्री-भाषा संबंधी दृष्टि के आलोक में यह लेख यह दिखाने का प्रयास करता है कि अनामिका की कविता व्यक्तिगत पीड़ा को सामूहिक स्त्री-अनुभव में रूपांतरित करती है। कविता में उपस्थित "हम भी इंसान हैं" का स्वर स्त्री-अस्मिता को मानवीय गरिमा और समान सामाजिक स्वीकृति के प्रश्न से जोड़ता है।

बीज शब्द: स्त्री-अस्मिता, स्त्री-विमर्श, अनामिका, स्त्री-भाषा, पितृसत्ता, काव्य-भाषा

परिचय
स्त्री-अस्मिता का प्रश्न हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की केंद्रीय चिंता के रूप में स्थापित है। यह प्रश्न केवल स्त्री की जैविक पहचान से संबंधित नहीं, बल्कि उसकी स्वायत्तता, गरिमा, अभिव्यक्ति-अधिकार और पूर्ण मनुष्य के रूप में स्वीकृति से जुड़ा है। अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' इसी मूल प्रश्न को तीव्र, संवादधर्मी और व्यंग्यात्मक भाषा में प्रस्तुत करती है। कविता का केंद्रीय स्वर यह है कि स्त्री को अब तक सम्यक् अर्थ में 'इंसान' नहीं माना गया; इसलिए उसे गंभीरता से पढ़ा, देखा और सुना भी नहीं गया। यह बोध कविता की प्रमुख पंक्तियों - "एक दिन हमने कहा / हम भी इंसान हैं- / हमें क़ायदे से पढ़ो एक-एक अक्षर"- में स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। इस अध्ययन का सैद्धांतिक आधार सिमोन द बोव्आर और हेलेन सिक्सू की अवधारणाएँ हैं। बोउवार स्त्री को सामाजिक-सांस्कृतिक निर्मिति के रूप में देखती हैं, जबकि सिक्सू स्त्री-अनुभव के अनुरूप ऐसी भाषा की संभावना रेखांकित करती हैं जो पुरुष-केंद्रित भाषिक अनुशासन को चुनौती दे। अनामिका की कविता में संवादधर्मिता, व्यंग्य और लोकानुभव से जुड़े बिंब इसी वैकल्पिक स्त्री-भाषा की संभावना को पुष्ट करते हैं। इसीलिए 'स्त्रियाँ' केवल स्त्री-पीड़ा की कविता नहीं, बल्कि स्त्री की समान मनुष्यता की वैचारिक घोषणा है। कविता की भाषा जितनी सहज है, उसका प्रतिवाद उतना ही तीक्ष्ण है।

शोध उद्देश्य :-
'स्त्रियाँ' कविता में स्त्री-अस्मिता के वैचारिक स्वरूप का अध्ययन करना , "पढ़ा गया", "देखा गया", "सुना गया" और "भोगा गया" की संरचना का शिल्पगत विश्लेषण करना , स्त्री के "हम भी इंसान हैं" कथन को मानवीय गरिमा और समान नागरिकता की माँग के रूप में समझना, कविता में अफ़वाह , कनखी और चरित्र-हनन को स्त्री-लेखन की सामाजिक बाधाओं से जोड़कर देखना , अनामिका की संवादधर्मी भाषा और स्त्रीवादी काव्य-भाषा का मूल्यांकन करना ।
साहित्य समीक्षा :-

अनामिका की कविता पर उपलब्ध आलोचना में सामान्यतः तीन बिंदु प्रमुख रहे हैं—स्त्री-विमर्श, भाषा की विशिष्टता और स्त्री-अनुभव का सामूहिक रूपांतरण। आलोचकों ने उनकी कविता को स्त्री-जीवन की पीड़ा, प्रतिरोध और स्वाभिमान की कविता के रूप में पढ़ा है; साथ ही उसकी संवादधर्मिता, लोक-सन्निकट मुहावरे और व्यंग्यात्मक ऊर्जा पर भी बल दिया है। प्रस्तुत शोध-पत्र की विशिष्टता यह है कि यह 'स्त्रियाँ' कविता की क्रियात्मक संरचना, मानवीय गरिमा के प्रश्न और स्त्री-लेखन की सामाजिक स्वीकृति—इन तीनों को एकीकृत रूप में विश्लेषित करता है।

शोध पद्धति :-

प्रस्तुत शोध-पत्र में गुणात्मक शोध-पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन का आधार पाठ-विश्लेषणात्मक, स्त्रीवादी आलोचनात्मक तथा समाजशास्त्रीय पद्धति है। अनामिका की 'स्त्रियाँ' कविता में प्रयुक्त बिंबों, प्रतीकों, भाषा-शैली और सामाजिक संकेतों के माध्यम से स्त्री-अस्मिता, पितृसत्तात्मक दृष्टि, स्त्री-वस्तुकरण तथा आत्मपहचान के स्वर का विवेचन किया गया है।

स्त्री-अस्मिता का आशय स्त्री के अपने स्वत्व, गरिमा, निर्णय-अधिकार और स्वतंत्र मानवीय पहचान से है। यह केवल सामाजिक भूमिकाओं—जैसे माँ, पत्नी या बहन—तक सीमित पहचान नहीं, बल्कि समान अधिकार, समान सम्मान और स्वायत्त अस्तित्व की माँग है। स्त्री-विमर्श का मूल प्रयोजन भी इसी अस्मिता को साहित्य और समाज में प्रतिष्ठित करना है। अनामिका इसी स्त्री-अस्मिता को अपनी कविता का केंद्र बनाती हैं, जिसे इतिहास और समाज ने गंभीरता से न पढ़ा, न देखा, न सुना।“ पढ़ा गया हमको जैसे पढ़ा जाता है काग़ज / बच्चों की फटी कॉपियों का / ‘चनाजोरगरम’ के लिफ़ाफ़े के बनने से पहले! / देखा गया हमको / जैसे कि कुफ्त हो उनींदे / देखी जाती है कलाई घड़ी / अलस्सुबह अलार्म बजने के बाद ! / सुना गया हमको / यों ही उड़ते मन से / जैसे सुने जाते हैं फ़िल्मी गाने / सस्ते कैसेटों पर / ठसाठस्स ठुंसी हुई बस में ! / भोगा गया हमको / बहुत दूर के रिश्तेदारों के दुख की तरह “1 कविता की चार आरंभिक क्रियाएँ—"पढ़ा गया", "देखा गया", "सुना गया" और "भोगा गया"—स्त्री के प्रति पितृसत्तात्मक व्यवहार की क्रमिक आलोचना रचती हैं। यहाँ 'पढ़ना' स्त्री के व्यक्तित्व को वस्तु या उपयोगी सामग्री की तरह ग्रहण करना है; 'देखना' उसकी स्वतंत्र सत्ता को उपेक्षित दृष्टि से आँकना है; 'सुनना' उसकी वाणी को गंभीरता से न लेना है; और 'भोगना' उसकी देह तथा संवेदना को अधिकार-विहीन उपभोग की वस्तु बना देना है। इस प्रकार कविता स्त्री-अस्मिता के प्रश्न को केवल समानता की माँग तक सीमित नहीं रखती, बल्कि देखने, सुनने, समझने और सम्मान देने की लोकतांत्रिक नैतिकता के रूप में प्रस्तुत करती है। और इन सबके पीछे सबसे बड़ा कारण यह था कि अभी तक उसे 'इंसान' ही नहीं समझा गया। “ एक दिन हमने कहा– / हम भी इंसान हैं / हमें क़ायदे से पढ़ो एक-एक अक्षर / जैसे पढ़ा होगा बी.ए. के बाद / नौकरी का पहला विज्ञापन। / देखो तो ऐसे / जैसे कि ठिठुरते हुए देखी जाती है / बहुत दूर जलती हुई आग। / सुनो, हमें अनहद की तरह / और समझो जैसे समझी जाती है / नई-नई सीखी हुई भाषा।“ 2 कविता का "हम" स्त्री-अस्मिता की सामूहिक चेतना का सूचक है। यह किसी एक स्त्री की निजी शिकायत नहीं, बल्कि उन असंख्य स्त्रियों की साझा वाणी है जिन्हें इतिहास, परिवार, समाज और साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाओं में पर्याप्त गंभीरता से नहीं पढ़ा, देखा और सुना गया। 'हम' का प्रयोग स्त्री को अकेलेपन से निकालकर बहनापे, साझी स्मृति और प्रतिरोध की सामूहिक शक्ति से जोड़ता है। इसीलिए कविता का कथ्य वैयक्तिक अनुभव से ऊपर उठकर संरचनात्मक असमानता की पहचान बन जाता है।

सिमोन द बोव्आर के अनुसार स्त्रीत्व जैविक नियति नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक निर्माण है; इसलिए स्त्री की हीनता भी प्राकृतिक नहीं, निर्मित है। इसी संदर्भ में कविता की पंक्ति "हम भी इंसान हैं" अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो उठती है। यह कथन किसी एक स्त्री की निजी शिकायत नहीं, बल्कि उस सामूहिक स्त्री-चेतना का उद्घोष है जो इतिहास, समाज और संस्कृति के भीतर अपनी मानवीय गरिमा की पुनर्स्वीकृति चाहती है। सिमोन द बोव्आर का प्रसिद्ध कथन।"स्त्री जन्म से नहीं होती, बल्कि (समाज द्वारा) बनाई जाती है।" इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि स्त्रीत्व जैविक नियति नहीं, बल्कि सामाजिक-

सांस्कृतिक निर्मिति है। इस दृष्टि से कविता की पंक्ति "हम भी इंसान हैं" केवल भावात्मक उद्गार नहीं, बल्कि निर्मित हीनता के विरुद्ध मनुष्यता की पुनःस्थापना का वक्तव्य है। सिमोन कहती हैं कि "अगर मैं ख़ुद को परिभाषित करूँ तो मैं पहले यह घोषित करने के लिए बाध्य हूँ: 'मैं एक औरत हूँ'; अन्य सभी दावे इस मूल सत्य से उत्पन्न होंगे।"3 और यह बाध्यता इस समाज ने उत्पन्न की है, जहाँ स्त्री-पुरुष के खाँचे समाज ने गढ़े हैं, जिनमें स्त्री को समाज में कमतर बताया गया और धीरे-धीरे ऐसी दुनिया का निर्माण हुआ जिसमें पुरुष सदैव उच्च रहा और औरत को नीचे ही रखा गया। दुनिया के आरंभ से ही पुरुष और औरत उपस्थित रहे हैं। प्रश्न उठता है, "लेकिन ऐसा क्या था कि पुरुष ही प्रारंभ से विजेता बना रहा? ऐसा भी तो हो सकता था कि औरत की जीत होती या फिर इस संघर्ष का कभी निदान ही न हुआ होता। यह कैसे हुआ कि यह दुनिया हमेशा पुरुषों की रही है और केवल आज ही चीज़ें बदलने लगी हैं? क्या यह बदलाव अच्छा है? क्या इससे औरत और मर्द के बीच दुनियावी मामलों में बराबर की साझेदारी हो पाएगी?"4 इस तरह के सवाल मस्तिष्क में हमेशा उभरते रहे होंगे, लेकिन उनके उत्तर भी सदैव पुरुष ने अपने हित में तलाशे या जान-बूझकर इस तरह दिए जिनसे उनका अपना स्वार्थ सिद्ध होता था। "ये सवाल कोई नए नहीं हैं; इनके हज़ारों जवाब दिए जा चुके हैं; लेकिन औरत अपने अन्या होने का विरोध करते हुए पुरुष द्वारा दिए गए उन तमाम जवाबों और तर्कों को अमान्य सिद्ध करने की कोशिश कर रही है: ज़ाहिर तौर पर वे सारे उत्तर पुरुष ने मनमाने ढंग से अपने स्वार्थों के लिए दिए हैं।"5 स्त्रियों की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक स्थिति जानने के बाद, तथा जीव-विज्ञान, मनोविश्लेषण और ऐतिहासिक भौतिकवाद द्वारा औरतों के प्रति अपनाए गए दृष्टिकोण को जानने के बाद, "तब हम समझ पाएँगे कि स्त्री उसी दायरे से बाहर निकलना चाहती है जिसमें अब तक उसे क़ैद रखा गया था, तो उसके सामने किस तरह की अड़चनें आती हैं। वह भी अपना व्यक्तिगत विकास करके अपने अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध करना चाहती है और मानवता में बराबर की साझेदारी की आकांक्षा रखती है।"6 स्त्री-अस्मिता की लड़ाई स्वयं को इंसान समझे जाने और मानवता में बराबर की साझेदारी की लड़ाई है। आधुनिक भारतीय स्त्री-विमर्श ने स्त्री को निजी दायरे से निकालकर शिक्षा, लेखन, सार्वजनिक भागीदारी और अधिकार-बोध के प्रश्न से जोड़ा, और उसी वैचारिक भूमि पर अनामिका की कविता का स्वर अधिक स्पष्ट होकर सामने आता है।

स्त्री-लेखन का संकट केवल लेखन-कौशल का संकट नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति का संकट भी है। जब स्त्री अपनी मनुष्यता और रचनात्मक अधिकार की घोषणा करती है, तब उसके तर्कों का उत्तर प्रायः विचार से नहीं, बल्कि चरित्र-संदेह, अफ़वाह और अविश्वास से दिया जाता है। अनामिका की कविता में "रंगीन अफ़वाहें", "दुश्चरित्र महिलाएँ" और "फिर ये उन्होंने थोड़े ही लिखी हैं" जैसी पंक्तियाँ इसी मानसिकता को उद्घाटित करती हैं। कविता के पाठ से स्पष्ट है कि यहाँ स्त्री के लेखन-अधिकार, उसकी वैचारिक क्षमता और सामाजिक प्रतिष्ठा—तीनों पर एक साथ आघात किया जाता है। स्त्री-लेखन की चुनौती किसी एक बिंदु पर टिकी नहीं है—यह प्रवेश से शुरू होकर, चयन, प्रतिनिधित्व, मुक्ति और अधिकार तक फैली एक श्रृंखला है, जहाँ हर पड़ाव पर स्त्री को वे चीज़ें अर्जित करनी पड़ती हैं जो पुरुष के लिए पहले से उपलब्ध रही हैं। लेखन इसलिए स्त्री के लिए केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि एक निरंतर संघर्ष और दावेदारी का क्षेत्र बना रहता है। बौद्धिक और साहित्यिक जगत में सदियों से एक ऐसा दायरा रहा है जिसकी सदस्यता पूर्वनिर्धारित थी — भाषा, व्याकरण और कहन के अभ्यास के मानक पुरुष-अनुभव से तय होते थे। स्त्री जब इस दायरे में प्रवेश करती है, तो वह किसी नियम की अपवाद नहीं बनती, बल्कि नियम को ही चुनौती देती है। “बौद्धिक दुनिया बरसों बरस ऐसे ही क्लब में बंधी रही है । जबकि स्त्रियों की एंट्री इन ' बौद्धिक क्लबों ' में एक ऐसे व्यक्ति का घुस आना है, जिसके पास न उनकी तय भाषा थी, न व्याकरण और न ही कहन का अभ्यास । उन्होंने स्त्रियों को ' 'आमंत्रित' नहीं किया, बल्कि वह बिना बुलाए भीतर घुस आईं । जिसकी सहज उपस्थिति और आवाज़ आज भी उन्हें असहज करती रहती है । विश्वविद्यालय, साहित्यिक मंच, दार्शनिक बहसें, आलोचना, परंपराएं , इन सब की भी संरक्षित सीमाएं रही हैं। स्त्रियाँ वहाँ आमंत्रित होकर नहीं पहुंची। वे सूचीबद्ध अतिथि नहीं थीं। वे ' पितृसत्तात्मक नॉलेज सिस्टम ' की ' इनवाइटेड गेस्ट' नहीं थीं। उनका भीतर आना, बोलना और लिखना 'अनचाहा , असुविधाजनक और अस्वीकार्य' रहा है।“7 पर यह घुस आना भी बिना शर्त नहीं

रहा। दरवाज़ा खुलने के बाद भी चयन की एक अदृश्य कसौटी बनी रहती है - कौन-सी स्त्री स्वीकार्य है और कौन-सी नहीं, यह अब भी पुरुष-निर्धारित मानकों पर टिका है। " प्रत्यक्ष में उन्हें स्त्रियों से परहेज नहीं है , पर उन्हें ऐसी स्त्रियाँ चाहिए , जो या तो उनके परिवार से हों या उनकी पसंद की हों/ उनकी पसंद की बात करती हों।"8 यह चयनात्मक स्वीकृति ही आगे बढ़कर एक व्यवस्थागत रूप ले लेती है -बौद्धिक जगहों पर संख्यात्मक उपस्थिति तो बढ़ती है, पर निर्णय की कुर्सी अब भी दूर बनी रहती है।

स्त्री के लिए लेखन का संकट तो है ही, लेकिन उससे भी बड़ा संकट है स्त्रियों की लेखक के रूप में स्वीकार्यता का। लेखिका को समाज में अपना स्थान बनाने से लेकर अपने चरित्र पर उठते इशारों का सामना करने तक का संघर्ष अकेले ही तय करना पड़ता है। अनामिका इन इशारों से अनभिज्ञ नहीं हैं। "इतना सुनना था कि अधर में लटकती हुई / एक अदृश्य टहनी से / टिड्डियाँ उड़ीं और रंगीन अफ़वाहें / चीख़ती हुई चीं-चीं / 'दुश्चरित्र महिलाएँ, दुश्चरित्र महिलाएँ- / किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूलीं-फैलीं / अगरधत्त जंगली लताएँ! / खाती-पीती, सुख से ऊबी / और बेकार बेचैन, आवारा महिलाओं का ही / शग़ल हैं ये कहानियाँ और कविताएँ...। / फिर ये उन्होंने थोड़े ही लिखी हैं / (कनखियाँ, इशारे, फिर कनखी) / बाक़ी कहानी बस कनखी है।"9 कविता में 'कनखी' केवल देखने की मुद्रा नहीं है; वह स्त्री के प्रति समाज की संदेहशील, नियंत्रक और चरित्र-निर्माता दृष्टि का प्रतीक है। जब स्त्री अपनी मनुष्यता और सृजनात्मक अधिकार की घोषणा करती है, तब उसके तर्कों का उत्तर विचार से नहीं दिया जाता; उसके चरित्र, संबंधों और लेखकीय क्षमता पर संदेह किया जाता है। "फिर ये उन्होंने थोड़े ही लिखी हैं" जैसी पंक्ति स्त्री की बौद्धिक क्षमता को नकारने वाली मानसिकता को उद्घाटित करती है। इस प्रकार कविता स्त्री के लेखन-अधिकार को भी अस्मिता के प्रश्न से जोड़ देती है।

अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' की भाषा का सबसे बड़ा गुण उसका संवादधर्मी, दृश्यात्मक और व्यंग्य-संपन्न होकर भी व्यापक रूप से स्वीकार्य होना है। उनकी यह कविता व्यापक मानवीय अनुभव की कविता बन जाती है। यह रोज़मर्रा के बिंबों और तीखी उपमाओं के साथ पाठकों के समक्ष जिस सहजता से उपस्थित होती है, वह स्त्री-जीवन के अपमान और उपेक्षा को सामने लाती है। "अनामिका को पढ़ते हुए उत्तर-आधुनिक स्त्रीवादी आलोचकों के चिंतन, स्त्री-लेखन, स्त्री-भाषा और द्वितीय चरण के स्त्रीवादी आंदोलनों से प्राप्त सिद्धांतों को सामने रखना होगा। निश्चित ही अनामिका के पास एक मज़बूत भाषा है जो लोक-भाषा के नज़दीक जाती है और स्त्री-भाषा के अपने मुहावरे गढ़ना चाहती है; और है एक मज़बूत स्त्रीवादी अध्ययन का वैचारिक आधार। लेकिन यह स्वाभाविक जिज्ञासा मुझे अक्सर हुई है कि स्त्रीवादी कविता कहे जाने के बावजूद अनामिका की कविता के इतने विस्तृत स्वीकार का कारण क्या है? अनामिका के यहाँ आने वाले बिंब स्त्री-जीवन के बेहद अपने बिंब हैं, लेकिन सबसे मज़बूत चीज़ है भाषा के साथ बड़े कौशल से खेल सकना। भाषा में अनामिका लकाँ के पितृ-नियम से नहीं, सिक्सू के मातृ-नियम के नज़दीक हैं।"10 अनामिका की कविता के व्यापक स्वीकार का कारण उसकी सरल, सहज किंतु व्यंग्यात्मक शैली से युक्त भाषा भी है। वे स्त्री-अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों को उठाते हुए उस स्त्री-पीड़ा को मानवीयता, बौद्धिकता एवं आत्मसम्मान से जोड़ देती हैं। यदि सिक्सू की स्त्री-भाषा की अवधारणा के आलोक में इस कविता को पढ़ा जाए, तो स्पष्ट होता है कि अनामिका भाषा को वर्चस्व के औज़ार के रूप में नहीं, बल्कि साझेदारी, प्रतिरोध और आत्म-अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में प्रयुक्त करती हैं। इसलिए उनकी कविता स्त्री-पीड़ा को केवल भावुक करुणा में नहीं, बल्कि आलोचनात्मक संवेदना में रूपांतरित करती है।

इस कविता का शिल्प क्रमिक पुनरावृत्ति पर आधारित है। "पढ़ा गया", "देखा गया", "सुना गया", "भोगा गया" जैसी संरचनाएँ स्त्री के जीवन की लगातार चलती हुई सामाजिक प्रक्रिया को दर्शाती हैं। इस पुनरावृत्ति से यह महसूस होता है कि स्त्री के साथ होने वाला व्यवहार आकस्मिक नहीं, बल्कि व्यवस्थित है। उनकी कविता की सबसे बड़ी ताक़त यही है कि वह बिंब और लय के ज़रिए सामाजिक सच्चाई तक पहुँचाती है। "कविता के शिल्प को स्त्री-कविता का शिल्प बनाते हुए अनामिका ने अपनी कविता में लगातार न केवल एक स्त्री-भाषा गढ़ने की कोशिश की है, बल्कि भाषा के 'मुच्छड़पन' की नस-नस जानते हुए उसे ख़ूब अलटा-पलटा, फेरा, घुमाया, उठक-बैठक कराई है, और वह बुलवाने की कोशिश की है जो

स्त्री कहना चाहती है।"11 शिल्प की सबसे बड़ी शक्ति यह है कि वह विचार को नारे में नहीं बदलता, बल्कि अनुभव की क्रमिक परतों के माध्यम से पाठक को सामाजिक सच्चाई तक पहुँचाता है।

निष्कर्ष :-

अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' स्त्री-अस्मिता के प्रश्न को करुण भावुकता की परिधि से निकालकर एक ठोस बौद्धिक और नैतिक प्रतिवाद के स्तर पर प्रतिष्ठित कर देती है। "पढ़ा गया", "देखा गया", "सुना गया" और "भोगा गया" जैसी क्रमिक क्रियाएँ केवल शिल्पगत युक्ति नहीं, बल्कि एक सुनियोजित पितृसत्तात्मक व्यवस्था के उद्घाटन का माध्यम बन जाती हैं, जो सिद्ध करती हैं कि स्त्री के प्रति उपेक्षा और वस्तुकरण आकस्मिक नहीं, संरचनात्मक है। सिमोन द बोव्आर की यह मान्यता कि स्त्रीत्व जैविक नियति नहीं, बल्कि सामाजिक निर्मिति है, कविता की केंद्रीय पंक्ति "हम भी इंसान हैं" में मूर्त रूप लेती है- यह उद्घोष निर्मित हीनता के विरुद्ध मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना का घोषणापत्र बन जाता है। वहीं हेलेन सिक्सू की स्त्री-भाषा संबंधी अवधारणा के आलोक में अनामिका की संवादधर्मी, व्यंग्यात्मक और लोक-निकट भाषा स्त्री-अनुभव को अभिव्यक्त करने का एक स्वतंत्र मुहावरा गढ़ती प्रतीत होती है, जो पुरुष-केंद्रित भाषिक अनुशासन को चुनौती देती है। कविता में उपस्थित अफ़वाह, चरित्र-संदेह और 'कनखी' के बिंब यह उजागर करते हैं कि स्त्री-लेखन की सबसे बड़ी बाधा कौशल का अभाव नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति का संकट है, जहाँ स्त्री के तर्कों का उत्तर विचार से नहीं, संदेह और अविश्वास से दिया जाता है। इस प्रकार अनामिका अपनी कविता में व्यक्तिगत स्त्री-पीड़ा को सामूहिक स्त्री-स्मृति में रूपांतरित करते हुए उसे एक व्यापक मानवीय प्रश्न में विस्तारित कर देती हैं, जो उन्हें केवल स्त्री-विमर्श की कवयित्री नहीं, बल्कि समग्र मानवीय गरिमा की प्रवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित करता है। यही कारण है कि 'स्त्रियाँ' कविता समकालीन आलोचकों की दृष्टि में स्त्री-जाति की सामूहिक चेतना और समान नागरिकता की माँग की एक प्रामाणिक काव्य-वाणी के रूप में स्वीकृत हुई है। निष्कर्षतः, यह कविता स्त्री-अस्मिता को समानता की सीमित माँग से आगे बढ़ाकर देखने, सुनने, समझने और सम्मान देने की लोकतांत्रिक नैतिकता के प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करती है। यहीं अनामिका की काव्य-दृष्टि की सबसे बड़ी उपलब्धि निहित है।

संदर्भ:-

1. अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ', कविताकोश से साभार
2. वही
3. बोव्आर सिमोन द. द सेकंड सेक्स, सिंह, मोनिका (अनुवाद), खंड-1 तथ्य और मिथक, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पेपरबैक, दूसरा संस्करण, प्राक्कथन, पृ. 7.
4. वही, पृ. 14.
5. वही, पृ. 14.
6. वही, प्राक्कथन, पृ. 22.
7. यादव योगिता ,साहित्य के ' एलीट क्लब ' में हम नंगे पांव घुस आए हैं (आलेख), राग वंदना,
8. (संपादक), कथादेश (स्त्री वैचारिकी , मुद्रक् प्रकाशन दिल्ली , पृष्ठ- 110
9. वही ,पृष्ठ – 111
10. अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ', कविताकोश से साभार।
11. सुजाता. आलोचना का स्त्री पक्ष: पद्धति, परंपरा और पाठ, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, नवंबर 2021, पृ. 252-253.
12. वही, पृ. 254-255.